मूल्य : एक प्रति ` 0.50 वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 18, अंक 2

फरवरी 2013

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 का गरिमापूर्ण समापन

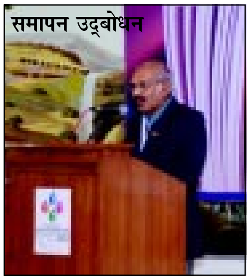

समापन उद्बोधन

15 से 23 फरवरी, 2014 की अवधि में नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के 22वें संस्करण के आयोजन एवं उसमें पोलैंड को अतिथि देश बनाए जाने की घोषणा के साथ नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 का गरिमापूर्ण ढंग से समापन हो गया। मेला स्थल, प्रगति मैदान में मेला-समापन की पूर्व संध्या पर आयोजित भव्य समारोह में ट्रस्ट-अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन ने यह घोषणा की। इस घोषणा के समय भारत में पोलैंड के राजदूत श्री पियोत्रो क्लॉदवेस्की, आईटीपीओ की मुख्य कार्यकारी एवं अध्यक्ष सुश्री रीटा मेनन, आईटीपीओ के विशेष कार्य अधिकारी श्री बी.एल. मीणा तथा भारत में फ्रांस दूतावास में सांस्कृतिक प्रतिनिधि मेक्स क्लाउजर भी उपस्थित थे। श्री क्लॉदवेस्की ने अपने आभार संबोधन में पोलैंड में भारतीय साहित्य के प्रति रुचि की जानकारी दी और कहा कि हमारे यहाँ प्रति वर्ष 24,000 पुस्तकें प्रकाशित होती हैं और इनमें भारतीय भाषाओं से अनूदित पुस्तकों की बड़ी संख्या होती है। हिंदी के अच्छे जानकार राजदूत महोदय ने भारतीय साहित्य का सीधे पोलिश में अनुवाद की आवश्यकता को रेखांकित किया। उन्होंने कहा–किसी तीसरी भाषा के बीच में आने पर मूल का असली स्वाद कम हो जाता है। श्री क्लाउजर ने पोलैंड को अतिथि देश का दर्जा दिए जाने पर खुशी व्यक्त की। सुश्री मेनन ने भविष्य में आयोजित होने वाले पुस्तक मेले को और सफल बनाने में आईटीपीओ की ओर से और अधिक सहयोग की बात कही। कार्यक्रम का संचालन ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने किया।

संवाद का यह अंक पूर्णतः नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 पर केंद्रित है। अंक के सभी पृष्ठों में पुस्तक मेला से संबद्ध गतिविधियों का सार-संक्षेप प्रस्तुत किया गया है। अंक पर आपकी प्रतिक्रिया अपेक्षित है। **–संपा.**

उद्घाटन

''मानवता के विकास में सबसे बड़ा योगदान अभिव्यक्ति की आजादी का रहा है, और यह आजादी हमें पुस्तकों, साहित्य से मिली है। पुस्तकों में वही दर्ज है जो लोगों का अनुभव है।'' यह उद्गार नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि, मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री शशि थरूर ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि पुस्तक मेले पुस्तकों से संवाद करने का बेहतरीन अवसर हैं। यही (पुस्तक मेला) वो समय है जब आप नई-नई पुस्तकों से परिचित होते हैं। उन्होंने आगे कहा, ''लोगों को पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने एवं पुस्तकों का उत्सव मनाने से अधिक आनंदित करने वाली कोई दूसरी चीज मैं नहीं देखता।''

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, राज्यसभा सदस्य एवं आईसीसीआर के अध्यक्ष डॉ. कर्ण सिंह ने कहा कि ''पुस्तकें सभ्यता के विकास का केंद्र रही हैं। इसने सभ्यता के इतिहास में महत्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका निभाई है।'' उन्होंने 'मूल्य आधारित शिक्षा' पर बल देते हुए कहा कि देश की सभी भाषाएँ ज्ञान की देवी सरस्वती की वाहिनी हैं और हमें सभी भाषाओं का सम्मान करना चाहिए।

पुस्तक मेले के सह-आयोजक भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन की मुख्य कार्यकारी व अध्यक्ष सुश्री रीटा मेनन ने कहा कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा आईटीपीओ के संयुक्त उपक्रम में भविष्य में पुस्तक मेला और भी बड़ा एवं बेहतर होगा।

पुस्तक मेला में फ्रांस के अतिथि देश होने के नाते उपस्थित फ्रांस के भारत स्थित राजदूत श्री फ्रिंसका श्रियर ने कहा कि फ्रांस में लेखन, मुद्रण, इंटरनेट आदि का आविष्कार तो नहीं हुआ लेकिन इसे समृद्ध बनाने में योगदान दिया जरूर है। उन्होंने कहा, ''पुस्तक मेला एक आयोजन-मात्र नहीं है। यह हमें आपस में जोड़ने का भी काम करता है।'' फ्रांस के अतिथि देश होने को उन्होंने फ्रांस के लिए 'बेहद महत्वपूर्ण अवसर' बताया।

फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स के प्रमुख श्री सुधीर मल्होत्रा ने कहा कि हमें भारत की कई ऐसी भाषाओं पर ध्यान देने की जरूरत है, जिनको बोलने-पढ़ने वाले कम हो रहे हैं। उन्होंने जानकारी दी कि पुस्तक एवं अन्य मुद्रित सामग्री का निर्यात रु. 1700 करोड़ को पार कर गया है। यह भी कि, भारत में विगत 3 वर्षों में पुस्तकों के व्यवसाय में 60% की वृद्धि दर्ज की गई है।

इससे पहले, अतिथियों एवं आगंतुकों का स्वागत करते हुए ट्रस्ट-अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन ने कहा कि ऐसे पुस्तक मेला को आयोजित करना हमारे लिए बड़ी जिम्मेवारी है और इसे वार्षिक आयोजन बनाने हेतु हमें और अधिक योजना एवं कड़े परिश्रम की आवश्यकता होगी। उन्होंने कहा कि भारत अब आर्थिक एवं शैक्षणिक रूप से अधिक समर्थ एवं शक्तिशाली देश बन गया है। उन्होंने इस पुस्तक मेले से ट्रस्ट द्वारा शुरू किए गए अनेक नए पहल, यथा–प्रतिलिप्यधिकार मंच, सीईओ स्पीक, लेखक मंच आदि की जानकारी भी दी।

धन्यवाद-ज्ञापन ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने किया। उद्घाटन-अवसर पर छत्तीसगढ़ से आए बस्तर बैंड ने अपनी शानदार प्रस्तुति दी।

उद्घाटन का दृश्य

किताबें कभी पुरानी नहीं होतीं। सूचना और ज्ञान के कितने भी साधन आ जाएँ, किताबों की जगह जस की तस रहेगी। –मैत्रेयी पुष्पा

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला का आयोजन मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन शीर्ष निकाय, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा किया जाता है। गत वर्ष तक द्विवार्षिक रहा यह पुस्तक मेला इस वर्ष से वार्षिक हो गया। सद्यःसंपन्न विश्व पुस्तक मेला अब तक का 21वाँ मेला था। इस पुस्तक मेले का सह-आयोजक था—भारत व्यापार संवर्धन संगठन (आईटीपीओ)।

एशिया और अफ्रीका के पुस्तक मेलों में नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला की अपनी विशेष प्रतिष्ठा है और इसकी गिनती क्षेत्र के विशालतम पुस्तक मेलों में होती है। 1972 से प्रारंभ नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले की इस कड़ी में 26 देशों ने भाग लिया एवं 1100 प्रकाशकों के 2200 स्टॉल/स्टैंड लगे।

पुस्तक मेले के दौरान बड़ी संख्या में पुस्तक एवं साहित्य से जुड़ी गतिविधियों के आयोजन हुए। इसके अंतर्गत अनेक संगोष्ठियाँ, प्रदर्शनियाँ, कार्यशालाएँ, कवि एवं लेखक गोष्ठी/सम्मेलन, पुस्तक लोकार्पण तथा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ हुईं। मेला परिसर, प्रगति मैदान के दो हॉल क्रमांक क्रमशः 7 एवं 18 में अनेक पैवेलियन (मंडप) निर्मित किए गए थे। ये थे—थीम पैवेलियन, बाल एवं युवा मंडप (हॉल नं. 7) तथा स्वामी विवेकानंद मंडप (हॉल नं. 18)।

प्रत्येक पैवेलियन एवं वहाँ आयोजित कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का विवरण संगत शीर्षक के साथ अलग से प्रस्तुत किया गया है।

थीम पैवेलियन (मंडप)

हर बार की तरह इस बार भी विश्व पुस्तक मेले के लिए एक थीम विशेष का चयन किया गया जिस पर यह पूरा पुस्तक मेला केंद्रित रहा। इस बार के पुस्तक मेले का थीम (मुख्य विषय) था—**देशज अभिव्यक्तियाँ : भारतीय परिकल्पना में लोक एवं जनजातीय साहित्य**। इस थीम के द्वारा देश की अल्पज्ञात विरासत को सामने लाने की कोशिश की गई। थीम केंद्रित अनेक प्रस्तुतियाँ पुस्तक मेले की विशेषता रही। इस प्रस्तुति में लोक एवं जनजातीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर पुस्तकों की एक विशिष्ट प्रदर्शनी के साथ-साथ साहित्यिक कृतियों, कला एवं शिल्पकला प्रदर्शन, अभिनय, कार्यशालाएँ एवं विमर्श के अनेक आयोजन हुए। थीम कार्यक्रम के लिए पश्चिम भारत के आदिवासी समुदाय, वर्ली, की महिलाओं की परंपरागत कला रूप 'वर्ली कला' को 'लोगो' के रूप में अपनाया गया।

प्रगति मैदान के हॉल नं. 7 में थीम पैवेलियन का निर्माण इस तरह से किया गया था कि वहाँ जनजातीय जनजीवन की जीवंत छवि रूपायित हो गई थी। जनजातीय लोगों के रहन-सहन के अनुकूल झोंपड़ियाँ, चौपाल आदि वहाँ निर्मित किए गए थे। लोक एवं जनजातीय संस्कृति-आधारित विभिन्न भाषाओं की लगभग 400 पुस्तकों की प्रदर्शनी इस मंडप की खास बात थी। इन पुस्तकों के स्वत्वाधिकार प्राप्त करने के इच्छुक लोगों के लिए इन पुस्तकों का एक आकर्षक सूची-पत्र भी तैयार किया गया था। यहाँ प्रतिदिन कार्यशाला, समूह-चर्चा आदि के आयोजन भी हुए। 'भारतीय दर्शन—विश्व पर्यावरण, शांति और जनजातीय भाषाओं का प्रचार भारत और विदेश में' विषय पर चर्चा में यह बात मुख्य रूप से उजागर हुई कि 'दरअसल भाषाएँ विलुप्त नहीं हो रही हैं, बल्कि जनजातीय ज्ञान खत्म हो रहा है। ज्ञान को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा चाहिए। अगर कुछ नया नहीं होगा तो भाषाएँ ताजा नहीं हो पाएँगी।' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा आयोजित अन्य गोष्ठी में मलयालम लेखक श्री नारायण ('कुच्चरेती' पुस्तक के लेखक) तथा पुस्तक की अनुवादिका डॉ. कैथरीन उपस्थित थीं। लेखक ने आदिवासियों पर लिखने के अपने अनुभव साझा किए। अनुवादिका ने जनजातीय साहित्य के अनुवाद पर अपने विचार रखे। 'चाक्षुस इतिहास' में इतिहास को कैमरे के लेंस से देखने की कोशिश थी। कार्यक्रम में राम रहमान, मालविका कारलेकर और अंजलि इला मेनन आई थीं। कार्यशाला में प्रसिद्ध छऊ नर्तक शशिधर आचार्य (ओडिशा)

ने मुखौटा बनाने की कला बताई। दरअसल, छऊ नर्तक मुखौटा पहनकर ही नृत्य करते हैं।

7 फरवरी, 2013 को पुस्तक मेले के थीम 'देशज अभिव्यक्तियाँ : भारतीय परिकल्पना में लोक एवं जनजातीय साहित्य' पर मुख्य समूह-चर्चा आयोजित हुई। इस चर्चा में विमर्शकर्ताओं की जो सामूहिक चिंता उभरी वह थी कि हमें अपने देशज और परंपरागत ज्ञान की रक्षा करनी चाहिए। चर्चा में झारखंड की रहने वालीं तथा जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली में असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. इवी हंसडक ने अपने पहले संताल चिकित्सक पिता का स्मरण किया और आदिवासी समुदाय में धर्मपरिवर्तन एवं उनकी परंपरागत संस्कृति के क्षरण पर अपनी बात रखी। नागा लेखिका प्रो. तेम्सुला आओ ने आदिवासियों के खान-पान, संगीत और साहित्य के विलुप्त होने पर चिंता जताई। उपन्यासकार श्री नारायण ने भी अपनी बात रखी। संचालन प्रो. जी.एन. देवी ने किया। केरल के बैम्बू सिंफनी ग्रुप की कार्यशाला में दर्शकों को प्राकृतिक संगीत से रूबरू होने का अवसर मिला। पुस्तक मेला के थीम पर केंद्रित नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा पुस्तक मेला के दौरान तीन पुस्तकों का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण परिघटना रही। हिंदी में प्रकाशित ये पुस्तकें थीं—*भारतीय आदिवासी जीवन* (निर्मल कुमार बोस)—पूर्व प्रकाशित पुस्तक का नए कलेवर में पुनर्प्रकाशन, *बस्तर की लोककथाएँ* (लाला

बच्चों को भविष्य से जोड़ने के लिए ज्ञान से जोड़ना होगा और ज्ञान पुस्तकों से जुड़ता है, इसलिए हमें पुस्तकों को हर समुदाय के बच्चे तक पहुँचाना होगा। —चंद्रा सदायत

जगदलपुरी और हरिहर वैष्णव द्वारा संकलित पुस्तक) तथा *आदिवासी दुनिया* (हरीराम मीणा)।

पुस्तक मेले की थीम का लोगो वर्ली कला से लिया गया। इसी वर्ली कला पर एक अंतर्क्रियात्मक सत्र के आयोजन में वर्ली पेंटिंग बनाने की कला सिखाई गई। वर्ली पेंटिंग के पितामह जीव्य सोमा माशे ने अपने पोते, वर्ली कलाकार किशोर माशे के साथ मंडप में इस कला की बारीकियों से अवगत कराया। विदित हो कि पश्चिम भारत के एक आदिवासी समुदाय, वर्ली, की महिलाओं द्वारा परंपरागत रूप से बनाई जाने वाली जनजातीय कला को वर्ली कला कहते हैं। त्रिचुर के पुलिकली मेकअप पर कार्यशाला लोगों को खूब रुची। इसमें कलाकार का पूरा देह 'कैनवस' बन जाता है, जिस पर शेर आदि का चित्रांकन किया जाता है।

थीम पैवेलियन में अंतिम समूह-चर्चा में मौखिक लोक साहित्य और प्रदर्शन पर चर्चा हुई। 'परंपराओं की खोज' के क्रम में कहा गया कि परंपरा में हमेशा नवीनता आती रहनी चाहिए। अगर हम एक विषय पर रुक जाएँगे तो वह रूढ़ि कहलाएगा। चर्चा में मौखिक लोक साहित्य को प्रोत्साहन देने पर जोर दिया गया। कहा गया कि मौखिक साहित्य में कल्पना को पर्याप्त जगह मिलती है। चर्चाकार थे–प्रो. राजगोपाल, अर्जुन देव चारण, बद्री नारायण, संजय कुमार, प्रकाश खांडगे, कोयमकोया, अनूप रंजन। संचालन प्रो. के. सच्चिदानंदन ने किया। लक्षदीव की अनूठी कला 'सूफी लोक गीत डोलीपट्टी' की प्रस्तुति मनभावन रही।

थीम पैवेलियन में लोक एवं जनजातीय संस्कृति की जीवंत झाँकी लोगों को देखने को मिल सके इस हेतु मंडप में जनजातीय संस्कृति की छवि निर्मित करने वाली कलाकृतियों एवं शिल्प आदि को सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया गया था। जनजातीय ग्राम्य जीवन को प्रस्तुत करता यह मंडप दर्शकों के लिए बेहद दिलचस्प और मनोहारी मंडप रहा।

देशज : लोक एवं जनजातीय प्रदर्शनों का एक महोत्सव

विश्व पुस्तक मेला साहित्यिक के साथ-साथ सांस्कृतिक आयोजनों से भी भरा-पूरा रहा। भारत की लोक एवं जनजातीय प्रदर्शन कलाओं का उत्सव, 'देशज' नाम से प्रगति मैदान के लाल चौक पर प्रतिदिन गुलजार रहा। 4 फरवरी को एनबीटी एवं संगीत नाटक अकादेमी के संयुक्त आयोजन, 'देशज' का उद्घाटन अकादेमी-अध्यक्ष

सुश्री लीला सैम्सन, ट्रस्ट-अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन, पद्मभूषण तथा अकादेमी विजेता तीजन बाई (पंडवानी गायिका) एवं हेमंत राजा भाई चौहान ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम की शुरुआत छत्तीसगढ़ के पंडवानी नृत्य समूह ने की। फिर गुजराती लोकगायक हेमंत चौहान ने कबीर और मीरांबाई के भजन गाए। मणिपुर का थांग-ता नृत्य भी आकर्षण का केंद्र रहा। अंत में छत्तीसगढ़ के बस्तर बैंड ने अपनी प्रस्तुति दी।

उद्घाटन-अवसर पर सुश्री सैम्सन एवं श्री सेतुमाधवन के उद्‌बोधन भी हुए। सुश्री सैम्सन ने अपने संबोधन में एनबीटी के साथ ऐसे ही और सहभागिता के प्रति अपनी आशा व्यक्त की जबकि श्री सेतुमाधवन ने कहा कि कला एवं साहित्य के बीच एक बहुत ही बारीक फर्क है, और ये दोनों समान रूप से अपना योगदान देते हैं।

देश की समृद्ध लोक एवं जनजातीय कलाओं को 'देशज' के माध्यम से देश के विभिन्न भागों से आए कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। अन्य दिनों की प्रस्तुतियाँ इस तरह रहीं : नाद समन्वयम (केरल), लाई हराओ-बा (मणिपुर), झूमर एवं नागपुरी गीत (झारखंड), धोलिया नृत्य एवं लोक गीत (उत्तराखंड), कबुई नागा नृत्य (मणिपुर), मांड (राजस्थान), बिहू नृत्य (असम), रागिनी (हरियाणा), भांड पाथेर (जम्मू-कश्मीर), बैंबू सिम्फनी (केरल), आओ जनजाति का लोक नृत्य-संगीत (नागालैंड), पुरुलिया छऊ (पश्चिम बंगाल), नक्काल (पंजाब), पुलिकली (केरल), परिचक्कलि और अट्टम (लक्षदीव), रास और मयूर नृत्य (उत्तर प्रदेश), बगरूम्बा और बोडो नृत्य (असम), कोलकली (लक्षदीव), बोहुरा गोधनी (बिहार), घुमरा (ओडिशा), होजगिरि नृत्य (त्रिपुरा), बोहदा नृत्य (महाराष्ट्र), ढोल चोलम (मणिपुर), बजशल नृत्य तथा सिद्धि धमाल जनजातीय नृत्य (गुजरात)।

मेले की पूरी अवधि में कला विषयक अनेक व्याख्यान, प्रदर्शन, समूह चर्चा तथा कार्याशालाएँ भी आयोजित की गईं।

पुस्तकें जीवन का नमक हैं और इनके लिए दांडी यात्रा की तरह एक नमक आंदोलन होना चाहिए। –अनामिका

देशज के तीन रंग

बाल एवं युवा मंडप

पुस्तक मेले में बाल एवं युवा मंडप हर बार की तरह इस बार भी आकर्षण का केंद्र बना रहा। इस मंडप में प्रतिदिन बच्चों एवं युवाओं के लिए गतिविधियाँ होती रहीं। गतिविधियों की शुरुआत से पूर्व, 4 फरवरी को मंडप का औपचारिक उद्घाटन किया गया। उद्घाटन सी.बी.एस.ई. के अध्यक्ष श्री विनीत जोशी ने किया। इस अवसर पर ट्रस्ट से अँग्रेजी में प्रकाशित कुछ बाल पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। ये पुस्तकें थीं–*माई फर्स्ट एरोप्लेन जर्नी* (पंकज चतुर्वेदी), *बूँद* (रामेंद्र कुमार), *हेल्पिंग हैंड* (समरेश चटर्जी) एवं *भक्त साल्वे* (रवींद्र साहू)। इस अवसर पर ट्रस्ट-अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन, ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर एवं ट्रस्ट में राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र (ट्रस्ट का अनुभाग) के संपादक श्री मानस रंजन महापात्र भी उपस्थित थे। पहले दिन के कार्यक्रमों में 'आनंददायी पठन में अभिभावकों की भूमिका' विषय पर समूह-चर्चा में अनेक विद्वानों ने विमर्श किया। पठन-प्रोन्नयन पर एक प्रहसन तथा गालिब पर नाटक की प्रस्तुति एवं गालिब की गजलों का गायन भी हुआ। कठपुतली के जरिए कहानी वाचन (संगीत नाटक अकादेमी द्वारा), विद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष सम्मेलन, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा भागीदारी कार्यक्रम 'आश्चर्यजनक तथ्य', एम.के. रैना द्वारा थिएटर पर कार्यशाला दूसरे दिन के कुछ मुख्य कार्यक्रम रहे। प्रहसन एवं नाटक भी हुए। तीसरे दिन 'पुस्तकें एवं आज के युवा' विषय पर दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दिनेश सिंह ने 'प्रेरक बातचीत' के इस सत्र में पुस्तक एवं पठन के महत्व एवं युवाओं के जुड़ाव की चर्चा करते हुए कहा कि "मैं पुस्तकप्रेमी हूँ और कोई भी पुस्तकप्रेमी ऐसे पुस्तक मेले से दूर नहीं रह सकता।" ट्रस्ट-अध्यक्ष श्री सेतुमाधवन एवं निदेशक श्री सिकंदर की गरिमामयी उपस्थिति इस सत्र में रही। 'युवाओं के लिए विज्ञान लेखन' विषय पर समूह-चर्चा में प्रो. यशपाल ने कहा कि एक बच्चा सर्वोत्तम ज्ञान अपने परिवेश से प्राप्त करता है। डॉ. एस.वी. ईश्वरम, डॉ. मधु पंत, प्रमोद जोशी एवं संगीता सेठी अन्य वक्ता थीं। लेखक एवं चित्रकार से मुलाकात कार्यक्रम में रवि परांजपे एवं रामेंद्र कुमार ने अपने-अपने विचार साझा किए। दोनों ने एक मत से कहा–किसी भी कला के लिए जुनूनी होना आवश्यक है। संगीता सेठी द्वारा आयोजित कार्यशाला में कहानी वाचन एवं उस कहानी पर नाट्य प्रस्तुति की गई।

'विज्ञान प्रसार' ने प्रदर्शन के द्वारा समझाया कि हर 'चमत्कार' के पीछे विज्ञान है; दरअसल, चमत्कार जैसी कोई चीज नहीं होती। केंद्रीय विश्वविद्यालय, हरियाणा की प्रस्तुति में प्रहसन के माध्यम से नैतिक शिक्षा एवं ज्ञान सृजन कैसे हो यह बताया गया। मुख्य अतिथि थीं आईटीपीओ की रीटा मेनन। विश्वविद्यालय-कुलपति प्रो. मूलचंद शर्मा द्वारा संपादित पुस्तक 'राइट टू एजुकेशन' का भी लोकार्पण किया गया। इसके अलावा, पहेली, प्रहसन, नृत्य गायन (दृष्टि अक्षम बच्चों द्वारा), पुस्तक कवर डिजाइन पर कार्यशाला एवं समूह-चर्चा ('प्रथम' द्वारा) के आयोजन भी चौथे दिन की गतिविधियाँ रहीं। कार्यशाला में कॉलेज ऑफ आर्ट, दिल्ली के प्रो. एस. वासु ने अपने विचार व्यक्त किए।

पाँचवें दिन 'अच्छी पुस्तकों का भविष्य' विषय पर समूह-चर्चा में आंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली के कुलपति प्रो. श्याम मेनन ने कहा, "पुस्तकें हमारे स्कूली जीवन से साथ चलना शुरू करती हैं और बहुत समय तक साथ रहती हैं। हमें आवश्यकता है उन्हें अपनी जरूरत बनाए रखने की, ताकि पुस्तकों का भविष्य बन सके।" प्रो. चंद्रा सदायत ने कहा, "बच्चों को भविष्य से जोड़ने के लिए ज्ञान से जोड़ना होगा और ज्ञान पुस्तकों से जुड़ता है, इसलिए हमें पुस्तकों को हर समुदाय के बच्चे तक पहुँचाना होगा।" संचालन अरविंद कुमार ने किया। कार्यक्रम का आयोजन एनबीटी तथा पीएजी-ई द्वारा किया गया। ट्रस्ट-निदेशक श्री सिकंदर ने इस अवसर पर कहा कि एनबीटी पुस्तकालयों, स्कूल आदि के लिए अच्छी पुस्तकों के चयन हेतु एक मार्गनिर्देशन की स्थापना पर कार्य कर रहा है। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय द्वारा 'शारीरिक एवं मानसिक रूप से अक्षम युवाओं हेतु पुस्तकें व करियर' विषय पर सृजनात्मक सत्र का आयोजन किया गया। एनसीईआरटी द्वारा 'खिड़की बच्चों की' नाम से सृजनात्मक लेखन कार्यशाला में मंजुला माथुर ने प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला 'बाल बुक की नई दुनिया में एक कदम' का आयोजन 'प्रथम बुक्स' ने किया।

छठे दिन 'युवा लेखक सम्मेलन' में प्रसिद्ध ओड़िया लेखिका डॉ. प्रतिभा राय ने युवा लेखकों से कहा, "अधिक से अधिक पढ़ें और कम लिखें... खूब पढ़ें, खासकर अपने समकालीन लेखकों को।" इस अवसर पर फ्रेंच अताशे डॉ. जुडिथ ओरिएल एवं ट्रस्ट-अध्यक्ष श्री सेतुमाधवन भी उपस्थित थे। 'स्टोरी घर' की जयश्री सेठी ने मनोरंजक तरीके से बच्चों को कहानी सुनाई। इस अवसर पर चाईबासा के चिन्मय दत्त की 'पाठक मंच' की उपलब्धि पर छापी गई पुस्तक का लोकार्पण ट्रस्ट-निदेशक श्री सिकंदर ने किया। खेल जगत की दो मुख्य हस्तियों–सुरिंदर कौर (महिला हॉकी टीम कप्तान) तथा रवींद्र सांगवान (कुश्ती) से मुलाकात युवाओं को खूब रुचा। इस अवसर पर ट्रस्ट की दो पुस्तकों–*मेरा पहला हवाई सफर* (पंकज चतुर्वेदी) तथा *बोलने वाली घड़ी* (क्षमा शर्मा) का लोकार्पण भी हुआ। 'बाल हस्तियों से मुलाकात' में सचिन सेठ (परफॉर्मर) तथा तेजस्वी शर्मा (योग विशेषज्ञ) से

युवा के व्यक्तित्व-विकास में पुस्तकों की बहुत बड़ी भूमिका है। –प्रो. दिनेश सिंह

बातचीत एवं योगासन-प्रदर्शन देखने का अवसर मिला।

इस अवसर पर पुस्तकों के महत्व पर पात्र अभिनय, करियर काउंसिलिंग पर उषा अल्बुकर्क द्वारा सत्र एवं हरियाणवी लोक नृत्य की प्रस्तुति भी हुई।

10 फरवरी को समापन दिवस पर कविता पाठ, पात्र-अभिनय, कार्यशाला, प्रहसन आदि अनेक कार्यक्रम हुए। विदित हो कि प्रगति मैदान के हॉल नं. 7 में बाल एवं युवा मंडप का निर्माण किया गया था। इस मंडप में मंच अभिनय के लिए मुख्य मंच के अलावा गतिविधि कोना एवं चित्रकार कोना का भी निर्माण किया गया था। मुख्य द्वार के दोनों ओर पुस्तकें सजाकर रखी गई थीं। हॉल की बाल सुलभ सज्जा आकर्षक थी। बच्चों एवं युवाओं का यह पसंदीदा मंडप था, जहाँ निरंतर भीड़ लगी रहती थी।

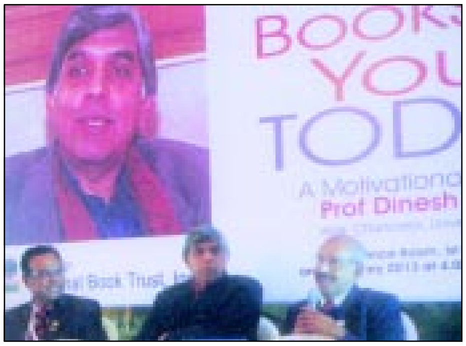

फ्रांस : सम्मानित अतिथि देश

इस वर्ष नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में फ्रांस को सम्मानित अतिथि देश का गौरव प्रदान किया गया। इस नाते पुस्तक मेला में फ्रांस का महोत्सव यानी 'बोनजोर इंडिया' मनाया गया। परंपरागत रूप से फ्रांस अपने सशक्त पुस्तक प्रकाशन उद्योग के लिए जाना जाता है। पुस्तक मेले में फोकस देश के रूप में फ्रांस मंडप की स्थापना की गई थी। यहाँ फ्रांस के 85 प्रकाशकों की 2000 से अधिक किताबें प्रस्तुत की गई थीं। ये पुस्तकें विविध विषयों पर थीं। इसमें बड़ी संख्या में बाल पुस्तकें एवं कॉमिक्स भी थे। मेले में साहित्यिक कार्यक्रमों—चर्चा, संवाद एवं संगोष्ठियों के अनेक आयोजन हुए। फ्रांस के प्रतिनिधि मंडल में अनेक संस्थाओं, लेखकों और प्रकाशकों के अलावा 25 विद्यार्थियों का एक समूह भी शामिल था। पुडुचेरी में फ्रांस की विरासत के अनेक छायाचित्रों की खुली प्रदर्शनी भी एक मुख्य आकर्षण था। भारत-फ्रांस व्यावसायिक गोलमेज बैठक के माध्यम से फ्रांस और भारतीय बाजार में उनकी आवश्यकता के अनुसार पुस्तकों के द्वार खोलने तथा पुस्तक उद्योग के संपादकों-विद्वानों के आपसी परिचय एवं आदान-प्रदान को बढ़ावा देने की कोशिश की गई। इस मेले में फ्रांस ने अपने मनमोहक संगीत, खान-पान तथा सिनेमा आदि के माध्यम से अपनी जीवंत सांस्कृतिक विरासत का भी प्रदर्शन किया।

4 फरवरी को पुस्तक मेला के उद्घाटन के साथ ही फ्रांस मंडप का भी उद्घाटन हुआ। हॉल नं. 7 में विदेशी प्रकाशकों के लिए निर्मित मंडप में फ्रांस का स्टॉल सबसे बड़ा एवं महत्वपूर्ण था। उद्घाटन-अवसर पर भारत में फ्रांस के राजदूत फ्रिंसका श्रियर ने कहा, "पुस्तकें दस्तावेजों को वर्षों-वर्षों तक संभाले रखने का सबसे सशक्त माध्यम हैं।" उन्होंने अतिथि देश का दर्जा मिलने पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा—भारत और फ्रांस में अत्यधिक समानता है। हम दोनों ही राष्ट्रों में लोकतांत्रिक मूल्यों की अत्यधिक समझ है।

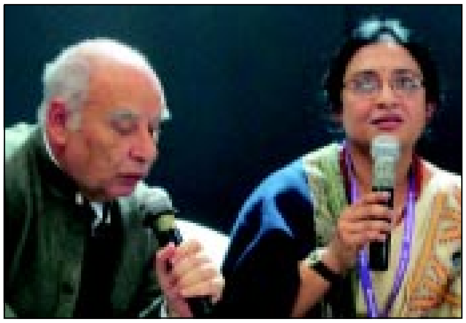

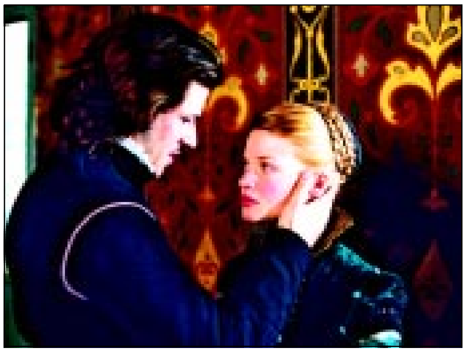

आधुनिक समाज में ज्ञान के प्रसार के लिए पुस्तकें ही सर्वोत्तम साधन हैं। –राम पुनियानी

लेखक मंच

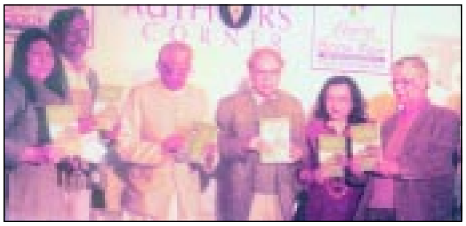

इस विश्व पुस्तक मेले में लेखक मंच या लेखक का कोना एक नूतन एवं अभिनव प्रयोग रहा, जिसकी व्यापक सराहना हुई। हॉल नं. 12 हिंदी प्रकाशकों के लिए था और इसी हॉल के मध्य और सबसे महत्वपूर्ण हिस्से को लेखक मंच के रूप में इस्तेमाल किया गया। सादगीपूर्ण व्यवस्थापन के बावजूद मंच आकर्षक था। यहाँ प्रतिदिन हिंदी के प्रकाशकों या फिर हिंदी अकादमी, दूरदर्शन आदि सरीखे सरकारी विभागों द्वारा अनेक साहित्यिक गतिविधियाँ होती रहीं। 'समन्वय संगत' नामक कार्यक्रम में प्रो. अपूर्वानंद ने पुस्तकों के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए हर वार्ड में सचल पुस्तकालय की आवश्यकता जताई, वहीं मायामृग ने कहा कि हिंदी प्रेमी गाँवों और कसबों में हैं, महानगरों में कम। हिंदी अकादमी, दिल्ली के कार्यक्रम 'परिवेश की चुनौतियाँ और मीडिया की भूमिका' पर मधुसूदन आनंद, महेश दर्पण, राहुल देव आदि के संबोधन हुए। राहुल देव ने बाजारूपन को गंभीर समस्या बताया। 'बचपन और किताबें' विषय पर चर्चा में नीलाभ अश्क ने कहा कि बच्चों में सहज बोध होता है और वे नकलीपन को पहचानते हैं। हिंदी अकादमी द्वारा आयोजित कवि गोष्ठी की अध्यक्षता लीलाधर जगूड़ी ने की। वाणी प्रकाशन ने नरेंद्र कोहली से पुस्तकप्रेमियों को मिलवाया। राजकमल प्रकाशन के कार्यक्रम में प्रो. नामवर सिंह ने लेखन की दशा-दिशा पर वक्तव्य दिया। 'दलित लेखन : पहचान और टकराव' विषय पर विद्वानों ने विमर्श किया। कहा गया कि दुनिया भर में दलित, शोषित सबसे पहले अपने पहचान की लड़ाई लड़ता है। हिंदी अकादमी के कार्यक्रम में परिवेश की चुनौतियों और रचनात्मकता के द्वंद्व पर विचार किया गया। चर्चाकार थे—मृदुला गर्ग, कृष्णदत्त पालीवाल, प्रदीप पंत। 'कैसे-कैसे किस्सागो' (भारतीय भाषा महोत्सव) कार्यक्रम में अब्दुल बिस्मिल्लाह ने जर्मन कहानी 'कारोबार' का वाचन कर किस्सागोई को रेखांकित किया। 'बीइंग पोएट' (वेब पत्रिका) की ओर से आयोजित काव्य पाठ की अध्यक्षता देवेंद्र कुमार देवेश ने की। 'अक्षरम' की ओर से आयोजित कार्यक्रम में विमलेश कांति वर्मा ने कहा हिंदी की रक्षा और प्रतिष्ठा के लिए हम निरंतर संघर्ष करते रहेंगे। विदेशों के हिंदी विद्वानों ने अपने-अपने देश में हिंदी की स्थिति पर बात रखी। प्रो. गंगाप्रसाद विमल संपादित 'कमलेश्वर संचयिता' (किताबघर प्रकाशन) का लोकार्पण नामवर सिंह ने किया। विभूति नारायण राय के उपन्यास के उर्दू अनुवाद 'मोहब्बत का तिलिस्माई अफसाना' का भी लोकार्पण किया गया। एनबीटी और 'कथा पंजाब' (ब्लॉग वेबसाइट) के संयुक्त आयोजन 'ब्लॉग और अनुवाद : एक परिचर्चा' में वक्ताओं ने ब्लॉग और अनुवाद पर विचार साझा किए। संचालन सुभाष नीरव का रहा। अखिलेश के कहानी संग्रह के मलयालम अनुवाद का लोकार्पण ए. सेतुमाधवन ने किया। अध्यक्ष थे—नामवर सिंह। दुष्यंत कुमार संग्रहालय के द्वारा आयोजित काव्य पाठ में लीलाधर मंडलोई, विष्णु नागर, मदन कश्यप आदि ने कविता पाठ किया। 'जानकी पुल डॉट कॉम' और एनबीटी के संयुक्त आयोजन 'महिला काव्य गोष्ठी' में विपिन चौधरी, अलका सिन्हा, वर्तिका नंदा, भाषा सिंह आदि कवयित्रियों ने कविता पाठ किया। हिंद युग्म प्रकाशन के 'हिंदी में बेस्ट सेलर' विषय पर चर्चा के क्रम में यह बात उभरकर आई कि हिंदी में पुस्तकें बिक रही हैं, लेकिन अँग्रेजी के अनुपात में कम। इसे बढ़ाना होगा। अंतिम दिन बहुभाषी कविता पाठ, 'सबकी आवाज' में हिंदी के कवि थे अशोक वाजपेयी। अन्य कवि थे—के. सच्चिदानंदन, राधावल्लभ त्रिपाठी, जे.पी. दास, बलवीर माधोपुरी, वसीम वरेलवी आदि।

विविध कार्यक्रम

लोकार्पण, व्याख्यान आदि जैसी अनेक साहित्यिक गतिविधियाँ हॉल नं. 12 के 'लेखक मंच' के अलावे हॉल नं. 18 में भी हुए। कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रमों की संक्षिप्त चर्चा यहाँ है। संगीता सेठी की पुस्तक 'एक देह एक आत्मा' का लोकार्पण मृदुला गर्ग ने किया। संयुक्त अरब अमीरात के दूतावास द्वारा आयोजित व्याख्यान में आधुनिक अरब की साहित्यिक गतिविधियों की चर्चा की गई। डॉ. आंबेडकर प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित संगोष्ठी में 'डॉ. आंबेडकर संपूर्ण वांग्मय' के 21 खंडों का केंद्रीय सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्री कुमारी सैलजा ने लोकार्पण किया। प्रकाशन विभाग के द्वारा प्रकाशित 'भारत-2013' का लोकार्पण केंद्रीय मंत्री मनीष तिवारी ने किया। नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित मुशायरे में शायरों ने अपनी नज्में सुनाईं। पंजाबी प्रचारिणी सभा के आयोजन में बच्चों को पुरस्कृत किया गया। मुख्य अतिथि थे तरलोचन सिंह (पूर्व सांसद)। बोधि प्रकाशन की दस पुस्तकों के सेट (मूल्य 100/-) का लोकार्पण अनामिका ने किया। वे बोलीं—"पुस्तकें जीवन का नमक हैं और इनके लिए दांडी यात्रा की तरह एक नमक आंदोलन होना चाहिए।" इंद्रप्रस्थ साहित्य भारती ने कवि गोष्ठी का आयोजन किया। पंजाबी साहित्य सभ्याचार संगठन के कवि सम्मेलन में 25 कवि थे। लाइब्रेरी प्रोफेशनल एसोसिएशन, दिल्ली की ओर से देशभर के पुस्तकालयकर्मियों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। 'किताब की यात्रा' विषयक कार्यशाला में पुस्तकालय के तीन चरण बताए गए—प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं ऑनलाइन। प्रकाशन विभाग से प्रकाशित 'नागार्जुन का कवि कर्म' (लेखक : खगेंद्र ठाकुर) का लोकार्पण नामवर सिंह ने किया। 'कविता और राजनीति' विषय पर भी परिचर्चा हुई जिसमें नागार्जुन पर वक्ताओं ने अपने विचार रखे। देश के पहले आदिवासी प्रकाशन 'आदिवाणी' ने दो पुस्तकों का लोकार्पण किया। लोकार्पित पुस्तक 'ये किसका देश है' पुस्तक को पिछड़े और दलितों का घोषणापत्र कहा गया। भारतीय भाषा महोत्सव की चर्चा 'सिर्फ साहित्य से ही काम नहीं चलेगा' में अभय कुमार दुबे, प्रियदर्शन व भाषा सिंह के उद्‌बोधन हुए। महोत्सव के एक कार्यक्रम 'भारतीय उपन्यास की अवधारणा' विषयक परिचर्चा में अशोक वाजपेयी, प्रभात रंजन और पंकज बिष्ट ने विचार व्यक्त किए। ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया की ओर से 'लोक तथा आदिवासी साहित्य' पर आयोजित परिचर्चा में रमणिका गुप्ता ने जनजातीय समाज को लक्षित करते हुए कहा कि यह एक मुक्त समाज है जिसकी कल्पना आज की तथाकथित सभ्य समाज करती है। श्याम सिंह शशि ने स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासियों की भूमिका के उचित मूल्यांकन नहीं होने पर दुख व्यक्त किया। 'हिंदी भाषा और मीडिया' विषयक परिचर्चा (नारायणी साहित्य अकादमी) में नामवर सिंह ने मीडिया पर जनता के नियंत्रण की बात कही, वहीं लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने कहा कि हिंदी मीडिया भाषा को आगे तो बढ़ा रही है पर दूषित भी कर रही है। कई लोगों को सम्मानित भी किया गया। अंतरराष्ट्रीय किसान परिषद के परिचर्चा में 'भूमि अधिग्रहण एवं किसान' पर चर्चा की गई। साहित्य अकादेमी और एनबीटी के संयुक्त आयोजन 'अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन' में पुस्तकों का भविष्य, कविता, कहानी, जनजातीय साहित्य, वाचिक साहित्य आदि विषयों पर लेखकों ने अपने विचार रखे। उद्घाटन ओड़िया लेखिका प्रतिभा राय ने किया। अकादेमी के कार्यकारी अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि आज पुस्तकें अपने लिए जगह तलाश रही हैं। बहुभाषी कविता पाठ भी हुआ जिसमें अनेक कवि थे। कहानी पाठ में भी विभिन्न भाषाओं के कथाकारों के पाठ हुए। अंतिम सत्र में परिचर्चा में जनजातीय और वाचिक साहित्य पर विचार हुआ।

एनबीटी द्वारा 'कॉसप्ले' यानी कॉस्ट्यूम प्ले का आयोजन एक अभिनव प्रयोग था। इसमें बच्चे अपनी पसंदीदा पुस्तक के चरित्र के परिधान में आकर अपनी प्रस्तुति देते थे। बच्चों में पठन आदत के विकास हेतु यह तरीका बेहद मुफीद माना जाता है।

पूरे पुस्तक मेला के दौरान अनेक निजी प्रकाशकों एवं संस्थाओं द्वारा बहुविध साहित्यिक आयोजन हुए, जिनमें पुस्तक लोकार्पण, संगोष्ठी, कार्यशाला, समूह-चर्चा, व्याख्यानमाला, ई-बुक्स पर प्रस्तुति आदि शामिल थे।

अच्छी पुस्तकों का समय कभी समाप्त नहीं होता। ...पुस्तकें हमारे स्कूली जीवन से साथ चलना शुरू करती हैं और निरंतर साथ रहती हैं। हमें आवश्यकता है उन्हें अपनी जरूरत बनाए रखने की, ताकि पुस्तकों का भविष्य बन सके। —प्रो. श्याम मेनन

नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच : एक अभिनव पहल

भारतीय पुस्तकों के विदेशों में प्रोन्नयन के अपने प्रयास के एक भाग के रूप में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की पहल 'नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच' का उद्घाटन 2 फरवरी को प्रगति मैदान में हुआ। पुस्तक मेला शुरू होने से पूर्व इस दो दिवसीय आयोजन (2-3 फरवरी) के उद्घाटन-अवसर पर ट्रस्ट-अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन ने कहा कि ''भारत का विश्व में एक बड़े प्रकाशन उद्योग के रूप में नाम है। हम हिंदी, अँग्रेजी के अलावा सभी भारतीय भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करते हैं। हमारा सपना है कि हमारी पुस्तकें पूरे देश में तथा विदेशों में भी पहुँचे। इस दिशा में प्रतिलिप्यधिकार मंच (राइट्स टेबल) एक बड़ा कदम होगा।'' ट्रस्ट-अध्यक्ष ने इस बात पर खुशी प्रकट की कि इस हेतु भारत एवं विदेशों से बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने नामांकन कराया। आने वाले समय में और प्रतिभागी आएँगे।

विदित हो कि इस मंच का उद्देश्य भारत तथा विदेशों के प्रकाशकों, प्रतिलिप्यधिकार एजेंटों, अनुवादकों एवं संपादकों को एक मंच पर लाकर आपसी संवाद, नेटवर्क निर्माण तथा व्यापार संभावनाओं की तलाश करना था। एनबीटी ने अपनी इस पहल के ही एक भाग के रूप में विदेशी प्रकाशकों को भारतीय पुस्तकों के अनुवाद हेतु वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने की योजना शुरू की है। उल्लेखनीय है कि प्रतिलिप्यधिकार व्यापार पुस्तक व्यवसाय का एक मुख्य घटक है।

भारतीय एवं विदेशी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने खुशी व्यक्त की कि ट्रस्ट के इस पहल का सब ओर से अच्छा प्रतिभाव मिला है। उन्होंने अगले वर्ष और अधिक प्रतिभागियों के शामिल होने की आशा व्यक्त की।

उद्घाटन के बाद 'प्रतिलिप्यधिकार व्यवसाय के संदर्भ में भारतीय प्रकाशन उद्योग का परिदृश्य' विषय पर एक समूह-चर्चा का आयोजन भी हुआ। प्रकाशन उद्योग की हस्तियों ने इसमें अपने विचार रखे। ट्रस्ट के प्रतिलिप्यधिकार के आदान-प्रदान के इस पहल की सभी दिग्गजों ने दिल खोलकर सराहना की और आशा व्यक्त की कि इस पहल के सकारात्मक परिणाम होंगे।

पुस्तक कला संस्थापन

पुस्तक मेले में पुस्तक कला संस्थापन एक अभिनव प्रयोग था। इसमें छह युवा कलाकारों ने सात थीम पर संस्थापन किए थे, जो पुस्तक विषय के ईर्द-गिर्द थे। जिन विषयों पर कला संस्थापन किए गए वे थे–ए लाइट ऑफ नॉलेज, द आइडिया बल्ब, द एवरग्रीन पॉन्ड, ए स्कूल बैग, द गार्डियन (नेस्ट), द विज्डम माइन एवं द नाइट स्कूल। संयोजित करने वाले सभी कलाकार कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली से थे। इनके नाम हैं–सुगंधा गौर, सरोज कुमार दास, दलजीत सिंह, रिंकू चौहान, राहुल गौतम तथा अभिजीत सैकिया। एफिल टावर को भी कला संस्थापन में शामिल किया गया था।

पुस्तक मेले में पहली बार

- **लेखक मंच :** हिंदी प्रकाशकों वाले हॉल में प्रवेश द्वार के ठीक सामने, मुख्य स्थान पर लेखक-कोना का निर्माण। यहाँ लेखकों से भेंट, संवाद, पुस्तक लोकार्पण, चर्चा-विमर्श, कवि गोष्ठी, लेखक सम्मेलन आदि आयोजन होते रहे।
- **पुस्तक कला संस्थापन :** हॉल नं. 7 में थीम पैवेलियन के साथ छह कलाकारों का सात अभिनव पुस्तक कला संस्थापन पुस्तक मेले का मुख्य आकर्षण था। इस प्रयोग से पुस्तक मेला और अधिक पुस्तकमय बन गया था। ज्ञान-प्रकाश, बल्ब, सदाबहार तालाब, स्कूल बैग, घोंसला, बुद्धिमत्ता की खान तथा रात्रिकालीन पाठशाला विषयों पर आधारित थे ये संस्थापन।
- **सीईओ स्पीक :** एनबीटी के इस आयोजन में 'फिक्की' का सहयोग था। इस फोरम का उद्देश्य था एनबीटी-अध्यक्ष के साथ प्रकाशन की दुनिया के दिग्गज, सीईओ (मुख्य कार्यकारी अधिकारी) आदि पुस्तक एवं प्रकाशन के हित, विकास एवं विस्तार हेतु अभिनव विचार आदि प्रस्तुत करें।
- **स्वत्वाधिकार मंच :** पुस्तक मेला से पहले, 2-3 फरवरी की अवधि में नई दिल्ली राइट्स टेबल (स्वत्वाधिकार मंच) का आयोजन। इसमें व्यवसायी से व्यवसासी वार्तालाप (बी$_2$बी) के लिए भारत और अन्य देशों के प्रकाशन व्यवसायी एवं राइट्स प्रतिनिधि एक साथ बैठे, मिले एवं संवाद किया।
- **ई-बुक्स प्रकाशक :** पहली बार ई-बुक्स प्रकाशक भी पुस्तक मेले में अपने स्टॉल लगाने आए। इन्हें हॉल नं. 3 में जगह दी गई थी। इन्फीबीन डॉट कॉम द्वारा आयोजित एक प्रस्तुति में ई-बुक्स और इसके व्यापार के फायदे बताए गए। इसमें किताबों के अलावा ऑडियो, वीडियो, लिंक्स आदि की भी सुविधा है, जिन्हें ऑनलाइन रजिस्टर कर पढ़ सकते हैं।

न.दि.वि.पु. मेला 2013 : तथ्यों के आईने में

- लगभग 45,000 वर्ग मीटर क्षेत्र में फैले इस मेले में हॉल संख्या 1 से 7, 12 तथा 12-ए, 14 तथा 18 में 1100 भारतीय तथा विदेशी प्रदर्शकों ने लगभग 2200 स्टॉलों पर पुस्तकों का प्रदर्शन किया।
- विदेशी पैवेलियन में शामिल देश और विश्व-संगठन थे : फ्रांस (अतिथि देश), सं.रा. अमेरिका, चीन, द. कोरिया, तुर्की, बेलारूस, पाकिस्तान (7 स्टॉल), श्रीलंका, नेपाल, ईरान, सऊदी अरब, शारजाह अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला, अबूधाबी अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला, विश्व बैंक, विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व श्रम संगठन, यूनेस्को, इंडियालॉग फाउंडेशन आदि।
- हॉल नं. 14 में क्षेत्रीय भाषा प्रकाशक, हॉल नं. 7 में विदेशी प्रकाशक, हॉल नं. 18 में बाल पुस्तक प्रकाशक तथा हॉल नं. 12 में हिंदी भाषा प्रकाशक थे। हॉल नं. 3 में ई-पुस्तकें उपलब्ध थीं।
- हॉल नं. 14 में क्षेत्रीय प्रकाशक थे–मलयालम, तमिल, तेलुगु, मराठी, गुजराती, सिंधी, पंजाबी, कश्मीरी, उर्दू, ओड़िया, असमिया, बांग्ला, संताली, भोजपुरी, मैथिली तथा संस्कृत।
- एक अनुमान के अनुसार पुस्तक मेले में प्रतिदिन 75,000 से अधिक पुस्तकप्रेमी आए। अंतिम दिन, रविवार को 1 लाख से अधिक आगंतुक आए। स्कूल-कॉलेज के छात्र अधिक संख्या में मेला देखने आए।
- मेले की दैनंदिन घटनाओं की जानकारी देने के उद्देश्य से प्रतिदिन हिंदी एवं अँग्रेजी में क्रमशः 'मेला वार्ता' एवं 'शो डेली' नाम से दैनिक बुलेटिन का प्रकाशन किया गया।
- प्रकाशक एवं उनके हॉल/स्टॉल/स्टैंड आदि की जानकारी से युक्त अँग्रेजी में 'फेयर डायरेक्टरी' का प्रकाशन किया गया, जो विक्रयार्थ रखे गए थे।

किताबों को ऐसे चुनें, जैसे जिंदगी में दोस्त। ...पुस्तकें केवल ज्ञान ही नहीं बढ़ातीं बल्कि जीवन में कुछ मूल्य भी पैदा करती हैं। –प्रो. अख्तरुल वासे

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/2/2013

स्वामी विवेकानंद पैवेलियन

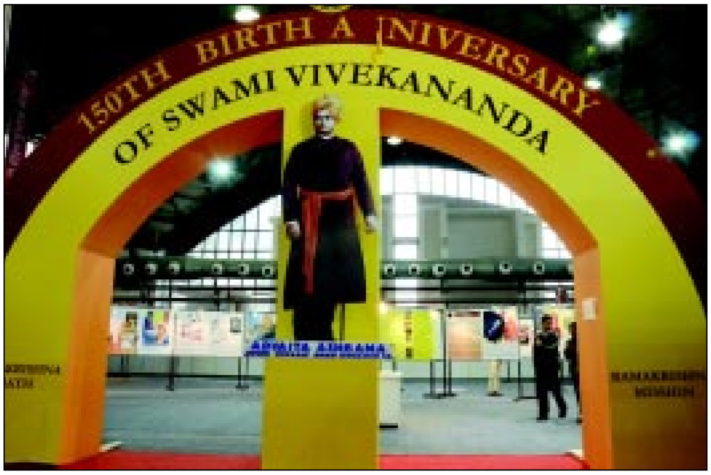

रवींद्रनाथ टैगोर ने एक बार कहा था—अगर भारत को जानना है तो विवेकानंद को पढ़िए। एक प्रसिद्ध इतिहासकार बाशम की नजर में 'आधुनिक विश्व को गढ़ने वाले लोगों में से एक' ऐसे ही व्यक्तित्व पर आधारित स्वामी विवेकानंद पैवेलियन आगंतुकों को खूब रुचा। यह वर्ष स्वामी विवेकानंद की 150वीं जयंती का वर्ष है ऐसे में यह आयोजन समीचीन ही था। रामकृष्ण मिशन द्वारा संकल्पित, संयोजित एवं स्थापित इस मंडप में स्वामी जी के जीवन की विभिन्न अवस्थाओं के छायाचित्र (व्याख्या सहित) एवं विवेकानंद विषयक पुस्तकें, चित्र, सीडी आदि प्रदर्शित थे। इस प्रदर्शनी से गुजरते हुए स्वामी जी के बचपन से लेकर अमेरिका में उनके बहुचर्चित संबोधन 'अमेरिका के मेरे भाइयो और बहनो' एवं आगे के जीवन के अनेक दुर्लभ छायाचित्र देखने का अवसर मिला। शांति, सत्यता और समन्वय का संगम था यह मंडप।

विश्व पुस्तक मेला से संबंधित अन्य सामग्री एवं छायाचित्र अगले अंक में भी।
—संपा.

जंगल के फूल

आंध्र प्रदेश के छायाचित्रकार **एम.सी. शेखर** की 'भारत के आदिवासी' शृंखला के प्रदर्शित छायाचित्रों में से कुछ छायाचित्र। थीम आधारित लगभग 60 छायाचित्रों की इस प्रदर्शनी को दर्शकों का अच्छा प्रतिभाव मिला।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2014

15 - 23 फरवरी, 2014

प्रगति मैदान, नई दिल्ली

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का मुख पत्र है।

इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070